3

''वे मुंह के बल गिर गए''

बालक यीशु की खोज में पूर्व से पंडित लोग आए। यहूदियों के नये जन्मे राजा को दण्डवत करने के स्पष्ट उद्देश्य के लिए वे दूर देश से चलकर आए थे। ''और उस घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया'' (मत्ती 2:11)। इस वचन में अनुवादित शब्द ''प्रणाम किया'' यूनानी भाषा के *proskuneo* का एक रूप है, जिसका नये नियम में आमतौर पर इस्तेमाल ''आराधना'' के लिए किया जाता है। इसका अर्थ है ''किसी व्यक्ति के सामने अपने आप को गिरा देना और उसके पांव, उसके वस्त्र का छोर, भूमि आदि को चूमना ... (झुक कर) दण्डवत करना, आदर करना, के सामने अपने आप को गिराना, भक्ति करना, आदर सहित स्वागत करना।''[1]

दण्डवत करने की शारीरिक मुद्रा से किसी के भक्तिपूर्ण और दीनता के व्यवहार का पता चलता था। परमेश्वर के सामने दण्डवत करने का यह व्यवहार गहरा आत्मिक अर्थ रखता है। यूहन्ना 40:20-24 में यीशु और कुएं पर मिलने वाली स्त्री ने आराधना के सही स्थान और व्यक्ति पर चर्चा करते समय इसी शब्द का इस्तेमाल किया।

आराधना के लिए नये नियम में कम इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द *latreia* है, जिसका अनुवाद आमतौर पर ''सेवा करना'' होता है और इसे धार्मिक कर्मकांडों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जिसमें परमेश्वर की सेवा या आराधना भी शामिल है। इस शब्द के लिए पुराने नियम का एक शब्द तम्बू या मन्दिर की सेवाओं को पूरा करने के सम्बन्ध में आामतौर पर इस्तेमाल किया गया है। फिलिप्पियों 3:3 खतने की शारीरिक क्रिया के विपरीत परमेश्वर की सेवा करने की मसीही ढंग की बात करती है। इब्रानियों 10:2 पुराने नियम की वेदी के कर्मकांडों के संदर्भ में इस शब्द का इस्तेमाल करता है। यीशु ने झुक कर शैतान को दण्डवत करने के शैतान के आग्रह का जवाब देते हुए इसी वाक्य का इस्तेमाल किया था (मत्ती 4:9, 10)। शैतान ने *proskuneo* शब्द का इस्तेमाल किया (आयत 9)। यीशु ने उत्तर दिया, ''तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम [*proskuneo*] कर और केवल उसी की उपासना [*latreus*] कर'' (आयत 10)। वह शैतान से कह रहा था कि ऐसा प्रणाम *केवल* परमेश्वर को ही हो सकता है।

आराधना के संदर्भ में शारीरिक मुद्रा का उल्लेख होने पर आमतौर पर हमें ''नीचे को झुकना'' या ''मुंह के बल गिरना'' मिलता है। बाइबल पच्चास से अधिक बार किसी न किसी रूप में परमेश्वर के सामने गिरने की बात करती है। आमतौर पर परमेश्वर की आराधना भूमि पर मुंह के बल गिरकर ही की जाती थी। ऐसी दीनता में गिरने वाले का मुंह जहां तक हो सके भूमि के साथ लगता था, यहां तक कि मिट्टी में भी।

मन का झुकना आवश्यक है

जब मूसा और हारून ने यह घोषणा की कि परमेश्वर ने इस्राएलियों के रोने की पुकार सुनी है और वे उन्हें मिस्र की दासता से छुड़ा लेगा तो ''उन्होंने सिर झुकाकर दण्डवत किया'' (निर्गमन 4:31)। जब मूसा ने फसह के विषय में बताया, ''तब लोगों ने सिर झुकाकर दण्डवत किया'' (निर्गमन 12:27)।

पत्थर की उन पट्टियों को, जिन पर दस आज्ञाएं लिखी गई थीं, तोड़ने के बाद मूसा फिर परमेश्वर से भेंट करने के लिए पहाड़ पर वापस गया। यहोवा बादल में नीचे आकर मूसा के सामने से अपनी उपस्थिति की घोषणा करते हुए गुजरा: ''यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य, ... है, ... तब मूसा ने फुर्ती कर पृथ्वी की ओर झुककर दण्डवत किया'' (निर्गमन 34:5-8)।

2 इतिहास 29 में हम पढ़ते हैं कि राजा हिजकिय्याह ने मन्दिर की मरम्मत कराकर इसे कई साल बाद आराधना के लिए पहली बार खुलवाया। पहली होम बलि पूरी होने पर, ''राजा और जितने उसके संग वहां थे, उन सभों ने सिर झुकाकर दण्डवत किया। और राजा हिजकिय्याह और हाकिमों ने लेवियों को आज्ञा दी कि ... भजन गाकर यहोवा की स्तुति करें। और उन्होंने आनन्द के साथ स्तुति की और सिर नवाकर दण्डवत किया'' (29:29, 30)।

एक और अवसर पर जिसका उल्लेख 2 इतिहास 20 में मिलता है, राजा यहोशापात को समाचार मिला कि अमोनियों, मोआबियों और मूनियों ने उसके विरुद्ध लड़ने के लिए एकता की है (आयतें 1, 2)। उसने परमेश्वर की ओर मुड़कर पूरे यहूदा में उपवास रखने की घोषणा कर दी (आयत 3)। यहूदा के लोग परमेश्वर से सहायता मांगने के लिए यरूशलेम में इकट्ठे हुए। यहोशापात उनके बीच में खड़ा होकर प्रार्थना करने लगा। जब वह प्रार्थना कर चुका तो यहोवा का आत्मा यहजिएल पर आया और उससे कहने लगा, ''तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो; क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है'' (आयत 15)। नबी ने लोगों को यरूएल नामक जंगल के सामने तराई के अन्त तक जाने को और वहां खड़ा होने को कहा, जहां से वे यहोवा की ओर से अपना बचाव देख सकें (आयतें 16, 17)। उसने अन्त में कहा, ''मत डरो, और तुम्हारा मन कच्चा न हो; कल उनका साम्हना करने को चलना और यहोवा तुम्हारे साथ रहेगा'' (आयत 17ख)। ''तब यहोशापात भूमि की ओर मुंह करके झुका और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने यहोवा के सामने गिरके यहोवा को दण्डवत किया'' (आयत 18)। फिर लेवियों ने खड़े होकर ऊंचे स्वर से परमेश्वर की स्तुति की (आयत 19)।

एक समय जब इस्राएल के लिए लग रहा था कि सब कुछ सही हो रहा है, एज्रा नबी को कुछ परेशान करने वाला समाचार मिला: यहां तक कि याजकों और लेवियों अर्थात लोगों के अगुओं ने देश के लोगों में अपने बेटे-बेटियों की शादी करके यहोवा की आज्ञाओं को तोड़ा था (एज्रा 9:2)। एज्रा डर गया था! शाम के बलिदान तक वह खामोश बैठा रहा; फिर मुंह के बल गिरकर उसने अपने हाथ परमेश्वर की ओर उठाए और प्रार्थना की। बाद में एज्रा ने लोगों को व्यवस्था को पढ़ने के लिए इकट्ठे किया। जब उसने व्यवस्था की पुस्तक को खोला तो सब खड़े हो गए। जब एज्रा परमेश्वर की स्तुति कर रहा था तो ''सब लोगों ने अपने-अपने हाथ उठाकर आमीन, आमीन, कहा; और सिर झुकाकर अपना-अपना माथा भूमि पर टेक कर यहोवा को

दण्डवत किया'' (नहेम्याह 8:5, 6)।

दण्डवत करने का एक और उदाहरण अय्यूब की पुस्तक में मिलता है। यह समाचार मिलने पर कि एक के बाद एक विपत्ति से उसका सब कुछ लुट चुका है, ''अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुंडाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत'' किया (1:20)। शैतान ने यह उम्मीद नहीं की थी, इसलिए यह दिलचस्प है कि यीशु को सांसारिक शान की पेशकश करते समय शैतान ने यीशु को उसके आगे गिरकर उसे दण्डवत कराना चाहा (मत्ती 4:9)।

हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि जो लोग स्वर्ग में हैं, उन्हें इसी प्रकार से दण्डवत करते दिखाया गया है। चौबीस प्राचीन उसके आगे जो सिंहासन पर बैठा है, गिरकर और उसके सामने अपने मुकुट फैंक कर उसे प्रणाम करते हैं (प्रकाशितवाक्य 4:10)। प्रकाशितवाक्य 7:11ख में हम पढ़ते हैं कि उन चौबीस प्राचीनों और चारों प्राणियों के साथ स्वर्गदूत ''सिंहासन के सामने मुंह के बल गिर पड़े और परमेश्वर को दण्डवत'' किया। चार अध्यायों के बाद हम देखते हैं कि चौबीसों प्राचीनों ने जो अपने सिंहासनों पर थे, ''मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत'' किया (प्रकाशितवाक्य 11:16ख)।

मन का झुकना आराधना से मेल खाता है

आराधना के लिए दण्डवत करना ही आवश्यक नहीं है, बल्कि दण्डवत करना ही आराधना है। क्या इसका अर्थ यह है कि आराधना हमेशा गम्भीर और उतरे हुए मुंह लेकर होनी आवश्यक है ? नहीं! बाइबल के अनुसार आराधना को कई बार आनन्द मनाने के रूप में दिखाया गया है। भजन संहिता 95:1-6 में गाने, आनन्द से पुकारने और धन्यवाद के साथ परमेश्वर के साथ आने का उल्लेख झुकने के संदर्भ में ही किया गया है।

जब यहूदी निर्वासितों ने जो यरूशलेम में लौट आए थे, व्यवस्था के पढ़े जाने के बारे में सुना तो वे रोए। एज्रा, नहेम्याह, और लेवियों ने उनसे कहा ''आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र है; इसलिए विलाप न करो और न रोओ। ... जाकर चिकना-चिकना भोजन करो और मीठा-मीठा रस पीओ और जिनके लिए कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास भोजन सामग्री भेजो; ... और उदास मत रहो क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है'' (नहेम्याह 8:9, 10)। यह जश्न का समय था। दण्डवत करने का समय बाद में, जश्न के सात दिन बाद आया। आठवें दिन एक गम्भीर सभा हुई (नहेम्याह 8:18) जिसमें उन्होंने टाट पहने और सिर पर धूल डाले हुए अपने पापी होने और निकम्मेपन को दिखाने के लिए उपवास रखा (नहेम्याह 9:1)।

2 शमुएल 6 में हम उस घटना के विषय में पढ़ते हैं, जब याजकों के कन्धों पर रखकर वाचा का सन्दूक यरूशलेम में ले जाया गया था। दाऊद ने सन्दूक के लिए विशेष रूप से एक तम्बू तैयार किया था। तम्बू के रास्ते में जुलूस के दाऊद के घर के पास से गुजरने पर, ''और दाऊद सनी का एपोद कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन-मन से नाचता रहा'' (आयत 14)। दाऊद की पत्नी मीकल ने उसे नाचते हुए देखा और उसे तुच्छ जाना। लगता नहीं है कि मीकल उसके नाचने से परेशान हुई या जश्न से, बल्कि दाऊद के पहरावे के ढंग से हुई होगी। उसे लगा कि उसकी पोशाक राजा की शान से मेल नहीं खाती। उसने उसके सेवकों के सामने एक आम या बेकार आदमी की तरह अपने आप को नंगा करने का आरोप लगाया। एक टीकाकार ने कहा है, ''मीकल

की नज़र में दाऊद का अपराध उसका नाचना नहीं बल्कि अपने शाही लिबास को उतार कर अपनी प्रजा के लोगों के सामने घटिया किस्म के वस्त्र में होना है।''[2] स्पष्टतया मीकल ने सनी के एपोद को जो मूलत: याजकों के लिए बनाया गया था (निर्गमन 39:2-7), दाऊद की शाही शान के विरुद्ध माना। वह इस बात को प्राथमिकता देता, कि वह अपने शाही लिबास और मुकुट शान से पहने, जुलूस के आगे-आगे शान से चलता। उसने अपने पिता शाऊल यानी पूर्व राजा के घमण्ड और कई बार के उसके अधार्मिक व्यवहारों को दिखाया। परन्तु दाऊद ने जश्न में अपने आप को झुका दिया। उसने जान-बूझकर सन्दूक उठाने वाले याजकों की दीन पोशाक पहनी। कई सालों बाद पहली बार वाचा के सन्दूक के रूप में यहोवा की उपस्थिति इस्राएल के साथ थी। संसार के भयदायक परमेश्वर की उपस्थिति में दाऊद ने अपने आपको कृतज्ञता पूर्वक निकम्मा समझा। उसने दिखाया कि झुकने के बिना जश्न आराधना के बिना जश्न है। झुकने के बिना जश्न अखड़पन हो सकता है!

झुकना एक व्यवहार है, न कि रूप

तो क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की उपस्थिति में आने पर हम सबको मुंह के बल गिरना आवश्यक है? केन नेल्लर ने एक दिलचस्प प्रश्न पूछा है: ''यदि आप अपने आप को अचानक परमेश्वर की उपस्थिति में पाएं तो क्या करेंगे?''[3] मुझे नहीं मालूम कि मैं क्या करूंगा। हो सकता है कि मेरा रंग उड़ जाए, पर उम्मीद है कि मैं वही करूंगा जो प्रकाशितवाक्य 1:17 में यूहन्ना ने किया था।

प्रभु के दिन, यूहन्ना ''आत्मा में'' (प्रकाशितवाक्य 1:10) था। ''आत्मा में'' होने को आमतौर पर आत्मिक भाव समाधि की स्थिति में होना माना जाता है,[4] जैसे पवित्र आत्मा की प्रेरणा से बात या प्रार्थना की जाती है। (देखें यहेजकेल 3:12-14; प्रेरितों 22:17.) यूहन्ना ने अपने पीछे से एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी कि जो कुछ उसने पुस्तक में देखा है उसे लिख ले। यह देखने के लिए कि कौन बात कर रहा है वह पीछे मुड़ा और अपने आपको उसने मनुष्य के पुत्र के सामने पाया। प्रेरित मुर्दे की तरह उसके कदमों में गिर गया। झुकना आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर के पास आने वाले की स्वाभाविक मुद्रा है।

एक बार मैं कीव यूक्रेन हवाई अड्डे के बोर्डिंग क्षेत्र में बैठा था। पूर्वी लिबास पहने हुए कई लोग बड़े कमरे के एक कोने में गए, जहां उस उद्देश्य के लिए एक बड़ा कालीन बिछाया गया था और वे मुंह के बल गिर गए। वहां वे कई मिनट तक रहे। वे मुस्लिम थे और उनकी नमाज का वक्त था। शायद झुकने के बारे में हम उनसे कुछ सीख सकते हैं। दूसरों के सामने झुकना शर्म की बात नहीं है और न ही दीन व्यक्ति कों ।

परन्तु मैं जैक हेफर्ड के साथ सहमत हूं:

> वास्तव में व्यक्तिगत उपासना में तो हो सकता है पर सभा में इकट्ठा होने के समय मुंह के बल गिरना न तो व्यावहारिक, आवश्यक और न आम तौर पर इसकी सिफारिश की जाती है। परन्तु एक झुकना है जो *हमेशा* आवश्यक हो सकता है: ध्मण्ड को त्यागना और मानवीय इच्छा को छोड़ देना, जो विनम्रतापूर्वक पूरे दिल से, आत्मिक रूप से जीवित और

> शारीरिक तौर पर व्यक्त की गई आराधना के दाम पर अपनी ही शान को मानने को तत्पर रहता है।[5]

शारीरिक मुद्रा जो भी हो, झुकना, हाथ ऊपर उठाना, बैठना या खड़े होना, परन्तु मन की मुद्रा झुकने वाली ही होनी आवश्यक है।

मुझे एक समय याद आता है जब प्रार्थना में मण्डली की अगुआई करने वाले आमतौर अपने घुटनों के बल झुक जाते थे। बिना किसी लाज के। एक भाई पीछे जाकर बैंच के सिरे पर एक घुटने पर झुक जाता है। एक दूसरा प्रार्थना में मण्डली की अगुआई करते हुए पुलपिट के पास घुटनों के बल गिर जाता।

एल्फ्रेड पी. गिबस ने व्यवस्थाविवरण 26:5-9 (KJV) में आराधक की दीनता पर टिप्पणी करते हुए इस प्रकार कहा:

> जाति, जगह, रूप या शान के किसी गर्व का कोई प्रावधान नहीं रखा गया था। उसका मानना था कि ''विनाश के लिए तैयार एक सीरियाई मेरा पिता था।'' उसने अपने आपको कोई ''हवा'' नहीं दी, कोई अभिमाान नहीं दिखाया। और परमेश्वर की उपस्थिति में आने के किसी प्रोत्साहक ढंग को नहीं माना। अपनी शान दिखाने उस बेकार वस्तु अर्थात शरीर को नहीं दिखाया जिसे मसीह ने कहा था कि उससे ''कोई लाभ नहीं'' (यूहन्ना 6:63)।[6]

घमण्डी आराधक का यीशु द्वारा नकारा जाना, लूका 18:10-14 में उसकी कहानी से स्पष्ट है। उस कहानी में एक व्यक्ति यानी फरीसी ने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि वह दूसरे व्यक्ति जैसा नहीं है, जो आराधना के लिए आया था। फरीसी परमेश्वर की उपस्थिति की अपेक्षा अपने आप में अधिक भय खाया हुआ था। उसने परमेश्वर की उपस्थिति में अपनी ही ''धार्मिकता'' की शेखी मारी, जबकि दूसरे आराधक ने जो चुंगी लेने वाला था, छाती पीटते हुए परमेश्वर से उसके रहम की भीख मांगी। दीन हुआ चुंगी लेने वाला घमण्डी फरीसी के बजाय परमेश्वर को अधिक प्रसन्न करके घर लौटा। परमेश्वर की महिमा दीन आराधक से ही होगी (देखें याकूब 4:10)।

सारांश

यीशु की कहानी वाले घमण्डी आराधक ने अपनी तुलना परमेश्वर से करने के बजाय अपने प्रभाव की तुलना दूसरे व्यक्ति पर अपने प्रभाव से की। जब हम अपनी तुलना परमेश्वर से करते हैं तो खुद-ब-खुद घुटनों पर आ जाते हैं। सच्ची आराधना हमें दिखावे और घमण्ड से निकालती है। व्यक्ति को ऊंचा करने वाली आराधना मांग करती है कि निजी आवश्यकताएं पूरी की जाएं यानी व्यक्तिगत प्राथमिकता को जोड़ने पर ज़ोर देने वाली आराधना है ही नहीं।

कुरिन्थुस के मसीही लोगों में पौलुस ने देखा कि उनमें आत्म केन्द्रित होने की समस्या है। अलग-अलग अगुओं को प्राथमिकता देने से उनमें फूट पड़ गई थी (1 कुरिन्थियों 1:12, 13)। निजी अधिकारों पर ज़ोर देने के कारण उन्होंने अनैतिकता को स्वीकार कर लिया था। एक दूसरे को कचहरियों में घसीटते थे और दूसरों के विवेक का अपमान करते हुए मूर्तियों को चढ़ाए गए चढ़ावे खाते थे (1 कुरिन्थियों 5; 6; 8)। आराधना में उनके आत्म केन्द्रित होने से परमेश्वर द्वारा

उन्हें दिए गए आत्मिक दानों को एक दूसरे से मुकाबला करने के प्रलोभन में डाल दिया था (1 कुरिन्थियों 12-14)। प्रभु के यादगारी भोज पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय अपनी भूख मिटाने पर ज़ोर देने के द्वारा वे प्रभु के भोज को भी तुच्छ जान रहे थे (1 कुरिन्थियों 11:17-34)। परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई पौलुस की ताड़ना उनकी आराधना के लिए परमेश्वर के विचार में कोई संदेह नहीं रहने देती: ''परन्तु यह आज्ञा देते हुए, मैं तुम्हें नहीं सराहता, इसलिए कि तुम्हारे इकट्ठे नहीं सराहता, इसलिए कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि होती है'' (1 कुरिन्थियों11:17)।

परमेश्वर के सामने स्वर्गदूत तक अपना मुंह छिपाते हैं (यशायाह 6:2)। स्वर्ग की सेनाएं उसके आगे झुक जाती हैं (प्रकाशितवाक्य 4:10; 7:11)। किसी और व्यवहार के साथ हम नाशवान लोग परमेश्वर को स्वीकार योग्य ढंग से उसके पास कैसे पहुंच सकते हैं? जश्न मनाएं, पर दीनता से जश्न मनाएं, झुके हुए मन के साथ! यीशु में विजय का जश्न मनाएं; परन्तु यह जान लें कि उस विजय का दाम है, और अपने आपको उसके आगे झुका दें, जिसने वह दाम चुकाया है। (देखें फिलिप्पियों 2:10, 11.)

टिप्पणियां

[1]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर एर्ली क्रिश्चियन लिटरेचल,* ट्रांस विलियम एफ. अनर्डट एण्ड एफ विलिबर गिंगरिच द्वितीय संस्क., एण्ड अग. एफ. बिलिबर गिंगरिच एण्ड फ्रैडरिक डब्ल्यू. डनकर (शिकागो यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1958), 716. [2]आर. पयने स्मित, *द पुलपिट कमैंट्री,* अंक 4, *रूत एण्ड 1 और 2 शमुएल,* संस्क.। एच. डी. एम. स्पेन्स एण्ड जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 147. [3]केन नेल्लर, ''रैवलेशन एण्ड क्रिश्चियन वरशिप,'' *हार्डिंग यूनिवर्सिटी लैक्चर्स* (1992): 154. [4]जे. डब्ल्यू. राबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, संस्क. एवरट फरगुसन (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 33. [5]जैक हेफर्ड, *वरशिप हिज़ मैजिस्टी* (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1987), 132. [6]एल्फ्रेड पी. गिबस, *वरशिप: द क्रिश्चियन'स हाइट्स ऑक्यूपेशन,* द्वितीय संस्क. (केनसस सिटी, केनसस: वाल्टरिक पब्लिशिंग, तिथि नहीं), 36.